प्रेम, अनुग्रह, दया और बपतिस्मा

''ज़्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा। किसी धर्मी जन के लिए कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु ज़्या जाने किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा'' (रोमियों 5:6-8)।

परमेश्वर के प्रेम, दया, और अनुग्रह के बिना हम सभी अनन्त दण्ड के भागी हो जाते। कुछ भी कर लें, हम अपना उद्धार स्वयं नहीं कमा सकते अर्थात अपने आप क्षमा नहीं पा सकते। परमेश्वर के स्वभाव और कार्यों से हमें उद्धार मिलता है।

परमेश्वर का प्रेम

''परमेश्वर प्रेम है'' (1 यूहन्ना 4:8ख) की अभिव्यक्ति में परमेश्वर का चित्रण मिलता है। परमेश्वर के प्रेम ने ही उसे यीशु को हमारे पापों के लिए मरने को देने के लिए प्रेरित किया। हमारा उद्धार हमारे कारण या हमारे भले कामों से नहीं बल्कि परमेश्वर के कारण हुआ है। जब हम पापी ही थे, अर्थात क्षमा नहीं पा सकते थे और दण्ड के योग्य थे, तो परमेश्वर ने हमारी ओर से काम किया:

> परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा (रोमियों 5:8)।
>
> ज़्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया (यूहन्ना 3:16क)।
>
> प्रेम इस में नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा (1 यूहन्ना 4:10)।

यद्यपि हम उसके प्रेम के योग्य नहीं हैं, तो भी हमें उसके प्रेम के कार्यों का लाभ उठाने

के लिए परमेश्वर की बात अवश्य माननी चाहिए। परमेश्वर प्रेम के कारण ही हमारी सेवा में काम करने के लिए प्रेरित हुआ। परमेश्वर के लिए हमारा प्रेम हमें उसके प्रति समर्पण करने में काम करने की प्रेरणा देता है (यूहन्ना 14:15, 21, 23)। वह धर्मी लोगों के लाभ के लिए काम करता है परन्तु दुष्टों की बात नहीं सुनता: ''ज़्योंकि प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उनकी बिनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करने वालों के विमुख रहता है'' (1 पतरस 3:12)। यह सत्य है ज़्योंकि परमेश्वर बुराई की सराहना नहीं करता। अपने पुत्र के विषय में उसने कहा था, ''तू ने धर्म से प्रेम और अधर्म से बैर रखा'' (इब्रानियों 1:9क)। वह ''सब अनर्थकारियों से घृणा'' करता है (भजन 5:5ख)।

बुराई करने वाला व्यक्ति जो यीशु में भरोसा नहीं करता और परमेश्वर के प्रेम को ग्रहण नहीं करता, उसके क्रोध में ही रहता है। यूहन्ना 3:36 कहता है, ''जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।'' रोमियों 2:5 में पौलुस ने चेतावनी दी है, ''पर अपनी कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके क्रोध के दिन के लिए, जिस में परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने निमित्त क्रोध कमा रहा है''(रोमियों 1:18; इफिसियों 5:6; प्रकाशितवाक्य 14:9, 10 भी देखिए।)

परमेश्वर के प्रेम व क्रोध में विरोधाभास नहीं है, बल्कि उसका क्रोध उसके प्रेम के ही कारण है। इसे इस प्रकार समझाया जा सकता है जिसमें हम दो विशेष परिस्थितियों में प्रतिक्रिया देते हैं। एक स्त्री जो अपने पति से बहुत प्रेम करती है, बहुत निराश होगी यदि उसका पति किसी दूसरी स्त्री को चाहता हो। यदि वह अपने पति से प्रेम नहीं करती तो उसे उस पर कोई क्रोध नहीं आएगा चाहे वह कितनी ही स्त्रियों को चाहता रहे। परमेश्वर का प्रेम उसकी जलन और क्रोध का कारण हो सकता है (निर्गमन 20:5; व्यवस्थाविवरण 4:24)।

यीशु ने हमें दिखाया और बताया है कि परमेश्वर के प्रेम में कैसे बने रहना है। उसने कहा था, ''जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसे ही मैंने भी तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे: जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है: और उसके प्रेम में बना रहता हूं'' (यूहन्ना 15:9, 10)।

परमेश्वर का प्रेम सशर्त है। *इससे पहले कि वह हमारा उद्धार करे, हमारे लिए विश्वास, मन फिराव, अंगीकार और बपतिस्मा परमेश्वर द्वारा ठहराई हुई शर्तें हैं। उसके प्रति अपने प्रेम के कारण उद्धार पाने के लिए हमें इन बातों को करना आवश्यक है।* इन शर्तों को हम उसके प्रेम का लाभ पाने के लिए पूरा करते हैं न कि इसलिए कि हम उसके प्रेम के योग्य बन जाएं। ज़्योंकि उसने वे शर्तें स्पष्ट कर दी हैं जो उससे प्रतिफल पाने से पहले हमारे लिए पूरी करनी आवश्यक हैं, इसलिए हमारे लिए उन शर्तों को मानना ज़रूरी है। ''और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया'' (इब्रानियों 5:9)।

परमेश्वर का अनुग्रह

यूनानी शब्द *charis* (इब्रा.:*hen*) जिसका अधिकतर अनुवाद ''अनुग्रह'' के रूप में होता है, नये नियम में 155 बार मिलता है। यही वह शब्द है जिससे अंग्रेज़ी में हमें ''मोह'' या ''शोभा'' के लिए ''charm'' या इसके जैसे शब्द मिलते हैं। हमारा उद्धार परमेश्वर के इसी गुण पर आधारित है। द न्यू इंटरनेशनल डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल के एक लेख में ''अनुग्रह'' की यह परिभाषा मिलती है:

> (1) सही कहें, तो इससे आनन्द, खुशी, प्रसन्नता, सुख, सुन्दरता; (2) मित्रभाव, प्रेमपूर्वक दयालुता, अनुग्रह, आदि; (3) एक दास के प्रति स्वामी की दयालुता मिलती है। इस प्रकार एकरूपता के द्वारा ही मनुष्य के प्रति परमेश्वर की दयालुता का पता चलता है (लूका 1:30)। लेखकों [नये नियम के] ने अपनी अलग-अलग पत्रियों के अंत में, बार-बार अपने पाठकों पर परमेश्वर के अनुग्रहकारी होने का आह्वान किया है (रोमियों 16:20; फिलि. 4:23; कुलु. [1:2]; 1 थिस्सलु. 5:28)। इसके अतिरिक्त, ''अनुग्रह'' शब्द का आम तौर पर इस्तेमाल किसी ऐसे व्यक्ति पर की गई दयालुता के विचार को व्यक्त करने के लिए किया जाता है जो उसका अधिकारी न हो: इस प्रकार यह विशेषकर यीशु मसीह के द्वारा पापियों पर की गई वह कृपा है जिसके कोई योग्य न हो (इफि. 2:4-5)। इसलिए अनुग्रह, पाप में गिरे हुए मनुष्य के प्रति परमेश्वर की वह कृपा है जिसे कमाया नहीं जा सकता और वह मसीह के कारण जो पिता का इकलौता, अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण (यूहन्ना 1:14) है, मनुष्य के छुटकारे के लिए इसे उपलब्ध करवाता है।[1]

अनुग्रह के महत्व को अधिक ज़ोरदार ढंग से नहीं कहा जा सकता। पाप के कारण हम कर्ज में हैं और अपने पाप का कर्ज चुकाने के लिए हमारे पास कुछ भी नहीं है। कर्ज कितना है इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यदि एक ने दस हज़ार रुपए देने हैं तो दूसरे ने केवल एक रुपया, परन्तु यदि वह कर्ज नहीं चुकाया जाता, तो दोनों ही कर्ज़दार रहते हैं। बिना यीशु के लहू के, सब लोग पापी हैं (रोमियों 3:9, 10, 23), मरने के योग्य हैं (रोमियों 6:23; याकूब 1:15) और हमारे पास ऐसा कुछ नहीं है जिससे हम अपने पापों का दाम अपने पास से चुका सकें।

एक रुपये के कर्ज़दार और दस हज़ार रुपये के कर्ज़दार को माफ़ी मिलने पर वे एक ही तरह से मुक्त होते हैं। एक पाप की क्षमा या बहुत से पापों की क्षमा पाने वाले दोनों को अपने पापों से स्वतन्त्रता मिलती है। जब एक फरीसी ने किसी पापिन स्त्री से मिलने के लिए यीशु की अलोचना की थी, तो यीशु ने उज़र दिया था, ''... मैं तुझ से कहता हूं; कि इसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, ज़्योंकि इस ने बहुत प्रेम किया; पर जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है'' (लूका 7:47)। परमेश्वर के अनुग्रह की यही विशेषता है।

अनुग्रह से भरे होने के कारण, यीशु ने (यूहन्ना 1:14) हमारे लिए अनुग्रह उपलब्ध

कराया (यूहन्ना 1:16)। मनुष्य के सब कर्म मिलकर भी उसके पाप के एक दाग को नहीं मिटा सकते (इफिसियों 2:8)। न ही मूसा की व्यवस्था (यूहन्ना 1:17) पाप को मिटा सकती है, ज़्योंकि इसमें अनुग्रह नहीं था (गलतियों 5:4)। पौलुस ने लिखा है, ''मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता, ज़्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता'' (गलातियों 2:21)।

हमारी धार्मिकता और उद्धार ''उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है'' (रोमियों 3:24) दिए जाते हैं। हम पढ़ते हैं:

> और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, ज़्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं बरन अनुग्रह के आधीन हो (रोमियों 6:14)।
>
> यदि यह अनुग्रह से हुआ है, तो फिर कर्मों से नहीं; नहीं तो अनुग्रह फिर अनुग्रह नहीं रहा (रोमियों 11:6)।
>
> ज़्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुज़्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुज़्हारी ओर से नहीं, बरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे (इफिसियों 2:8, 9)।

उद्धार हमारे अपने कर्मों से नहीं बल्कि परमेश्वर के काम अर्थात अनुग्रह के द्वारा उपलज़्ध करवाया गया है।

परमेश्वर का अनुग्रह अर्थात उसकी वह कृपा जो कमाई न जा सके सब के लिए है (तीतुस 2:11), परन्तु उसके अनुग्रह को सब लोग प्राप्त नहीं करते। ज़्योंकि अनुग्रह यीशु के द्वारा मिलता है (यूहन्ना 1:17; रोमियों 5:15), इसलिए उसे ग्रहण न करने वाले (यूहन्ना 1:11; 12:48) परमेश्वर के अनुग्रह को नकारते हैं। यीशु ही है जिसने, परमेश्वर के अनुग्रह के कारण, अपने लहू से हमारे उद्धार का दाम चुकाया है (प्रेरितों 20:28; इब्रानियों 9:14; 10:19, 20; 1 पतरस 1:17–19)। इसलिए, उसे अधिकार है कि वह जिसे चाहे उद्धार दे और उसके लिए अपनी शर्तें रखे (इब्रानियों 5:9)।

रोमियों 6 अध्याय में पौलुस ने पूछा था, ''ज़्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो?''; ''हम जब पाप के लिए मर गए तो फिर आगे को उस में ज़्योंकर जीवन बिताएं?'' (आयतें 1, 2)। इन प्रश्नों का अर्थ यह है कि अनुग्रह में प्रवेश करने पर हमें पाप के लिए मर जाना चाहिए और पाप करने की अपनी आदत छोड़ देनी चाहिए। पौलुस ने एक और प्रश्न पूछकर कि ऐसा होना चाहिए इस समय को इस तरह से समझा: ''ज़्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का (में) बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का (में) बपतिस्मा लिया?'' (आयत 3)। फिर उसने लिखा, ''सो उस मृत्यु का (में) बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नये जीवन की सी चाल चलें'' (आयत 4)।

पौलुस के शब्दों से हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि बपतिस्मा लेने के समय हम परमेश्वर के अनुग्रह में आते हैं। यीशु में बपतिस्मा लेने के समय (रोमियों 6:3), हमें परमेश्वर का अनुग्रह मिलता है, जो यीशु में ही है, जैसा कि हम इफिसियों 1:7 और 2 तीमुथियुस 2:1 में देखते हैं। ये पद बपतिस्मे को अनुग्रह में प्रवेश करने से जोड़ते हैं। जिन्होंने बपतिस्मा नहीं लिया वे मसीह से बाहर हैं, मसीह से अलग हैं (इफिसियों 2:12, 13) और मसीह में मिलने वाले अनुग्रह के बिना हैं (गलतियों 5:4)। *बपतिस्मे से परमेश्वर के अनुग्रह को कमाया नहीं जाता, बल्कि बपतिस्मा लेने से अपने विश्वास के कारण उसमें प्रवेश किया जाता है।* हम यदि पापपूर्ण जीवन बिताना जारी रखें तो उसका अनुग्रह मिलना जारी नहीं रहता। ''पवित्र ठहराए'' जाने के बाद ''जानबूझ कर पाप करना'' जारी रखने वाले लोग ''अनुग्रह के आत्मा'' का अपमान करते हैं। इब्रानियों 10:26-29 कहता है:

> ज़्योंकि सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिए फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। हां, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा। जब कि मूसा की व्यवस्था का न माननेवाला दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दया के मार डाला जाता है। तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पांवों से रौंदा, और वाचा के लोहू को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया।

परमेश्वर की दया

''दया'' (यू.: क्रिया- *eleeo*; संज्ञा- *eleos*) का अर्थ है ''विरोधी या नियम तोड़ने वाले को कठोर दण्ड देने से परहेज़ करना; वह करुणा जो निर्बल, बीमार या निर्धन की सहायता करने के लिए उकसाती है।''[2] इसमें कर्ज चुकाने की इच्छा न होना भी शामिल है (मत्ती 18:33)। यद्यपि अनुग्रह में दया अवश्य होती है, परन्तु अनुग्रह दया से आगे निकल जाता है। अनुग्रह और दया दोनों ही गलती के लिए दण्ड देने से परहेज़ करते हैं; परन्तु अनुग्रह गलती करने वाले के लिए सहायता प्रदान करके आगे निकल जाता है।

यदि कोई व्यक्ति जिसका घर न हो, जान बूझकर किसी के घर को हानि पहुंचाए, तो घर के स्वामी द्वारा उस व्यक्ति को दण्ड देना और/या हुई हानि का मोल लेना न्यायसंगत है। यदि घर का स्वामी बुराई करने वाले व्यक्ति से दाम लेने या उसे दण्ड देने से परहेज़ करता है, तो वह दया या करूणा दिखा रहा होगा। यदि वह स्वामी हानि पहुंचाने वाले को क्षमा कर देता है और उसे रहने के लिए स्थान देता है, तो यह उसका अनुग्रह है।

परमेश्वर अपनी इच्छा को मानने वालों पर अपनी करूणा से उनके लिए दण्ड से क्षमा और मुक्ति का प्रबन्ध करता है। अपने अनुग्रह के कारण, उसने स्वर्ग में अनन्त जीवन का प्रबन्ध किया है। परमेश्वर की दया उसे पापी को दण्ड देने से रोकती है, और उसका अनुग्रह उन्हें वे आशिषें देने के लिए प्रेरित करता है जिनके वे अधिकारी नहीं हैं।

''ज़्योंकि परमेश्वर ने सब को आज्ञा न मानने के कारण बन्द कर रखा ताकि वह सब पर दया करे'' (रोमियों 11:32)। दया का अर्थ आज्ञा मानने वाले उन पापियों को क्षमा करना है जो पहले आज्ञा नहीं मानते थे। पौलुस ने अपने आप को पापियों में सबसे बड़े पापी के रूप में प्रस्तुत किया जिस पर दया हुई थी (1 तीमुथियुस 1:15, 16)। दमिश्क नगर में पौलुस पर परमेश्वर की क्षमा और दया दिखाई गई थी। हनन्याह ने पौलुस से कहा था, ''अब ज़्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)। *पौलुस ने बपतिस्मा लेकर परमेश्वर की दया या करुणा कमाई नहीं थी; परन्तु उसने क्षमा में प्रवेश अवश्य किया था जो परमेश्वर के अनुग्रह और दया द्वारा उपलज़्ध करवाई गई थी।*

सारांश

बेशक हम सब पापी हैं, परन्तु परमेश्वर अपने प्रेम, अनुग्रह और दया के कारण हमारी सहायता के लिए प्रेरित हुआ। ऐसी आशिषों के योग्य होने के लिए हम कुछ नहीं कर सकते; परन्तु उन्हें पाने के लिए हमें परमेश्वर की आज्ञा को मानना आवश्यक है। विश्वास, मन फिराना, अंगीकार करना और बपतिस्मा लेना हमारी योग्यता के कारण नहीं है कि उनसे हम परमेश्वर की आशिषों के योग्य बन जाएं; बल्कि वे ऐसी शर्तें हैं जिन्हें परमेश्वर के अनुग्रह और दया से प्रतिज्ञा की हुई उसकी आशिषें पाने से पहले पूरा किया जाना आवश्यक है।

पाद टिप्पणियां

[1] *द न्यू इंटरनेशनल डिज़्शनरी ऑफ़ द बाइबल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: रिजेंसी रेफ़रेंस लाइब्रेरी, ज़ोंडर्वन पज़्लिशिंग हाउस, 1987), 401 में जे. डी. डगलस और मेरिल सी. टेनी, सं., ''ग्रेस।'' [2] *द न्यू इंटरनेशनल डिज़्शनरी ऑफ़ द बाइबल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: रिजेंसी रेफ़रेंस लाइब्रेरी, ज़ोंडर्वन पज़्लिशिंग हाउस, 1987), 641 में जे. डी. डगलस और मेरिल सी. टेनी, सं., ''मरसी।''